International Journal on Future Revolution in Computer Science & Communication Engineering
Volume: 3 Issue: 9
ISSN: 2454-4248
256 – 260

अस्तित्ववाद व मानववाद के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

[1]डॉ. प्रवीन शर्मा
प्राचार्य
शहीद भगत सिंह कॉलेज ऑफ एजुकेशन
औढां रोड़ कालांवाली, सिरसा

[2]दीपक मैथिल
सहायक प्रोफेसर (कॉमर्स विभाग)
गुरू नानक खालसा कॉलेज
अबोहर, पंजाब

अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही दर्शन आधुनिक औद्योगीकरण तकनीकी परिर्वतनों, विज्ञान के बढ़ते प्रभाव से व्यक्ति की महत्ता कम होने व सर्वत्र चिन्ता, विषाद और निराशा के वातावरण के विरूद्ध मानव को इस स्थिति से उभारने के लिए ही अस्तित्व में आए। दोनों ही दर्शन मानते हैं कि विज्ञान के द्वारा दिए उपकरणों, मशीनों ने मानव जीवन को सुखी तो बना दिया है परन्तु वह स्वयं भी एक मशीन बन गया है मानव के स्वयं का अस्तित्व संकट में आ गया है। मानवता खत्म होती जा रही है। विज्ञान के बढ़ते प्रभाव ने मानव की गौरवमयी अतीत को धुमिल कर दिया है।

अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही यद्यपि विज्ञानवाद के विरूद्ध है तथापि दोनों ही यह मानते हैं कि विज्ञान का सीमित मात्रा में प्रयोग मानव–जीवन में किया जा सकता है। अस्तित्ववादी चाहते हैं कि मनुष्य यांत्रिकता का संचालक बने न कि उसके हाथ की कंठपुतली। मानववादियों के अनुसार वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग केवल उसी सीमा तक किया जाए, जहां तक उसका मानवीय पक्ष प्रथम बना रहे। अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही मानवता को गौण समझने तथा व्यक्ति का शोषण करने वाली एकांगी प्रकृतियां का विरोध करते हैं। दोनों ही दर्शन मानते हैं कि बाह्य जगत की अपेक्षा आन्तरिक अनुभूति और आत्मनिष्ठता पर आधारित अध्ययन ही वास्तविक अध्ययन है।

अस्तित्ववादी आत्मनिष्ठता के कारण आत्मा से संबंध बनाकर ईश्वर के दर्शन करके सभी की सत्ता को स्वीकार करते है। और सर्वकल्याणकारी मार्ग अपनाते है। मानववादी भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं और मनुष्य में ईश्वर का अंश मानते हैं। मानववाद के अनुसार मनुष्य की सेवा करके ईश्वरीय सेवा का सुख प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार मानववाद भी जीव में ईश्वर का अंश मानते हुए जगत की सत्ता को स्वीकार किया गया है। अस्तित्ववादी व मानववादी दोनों ही दर्शनों का उद्देश्य, आत्मानुभूति करना, आत्मनिष्ठता का गुण उत्पन्न करना आध्यात्मिक संसार से साक्षात्कार करना, ईश्वर को जानना आत्मबल, आत्मविश्वास उत्पन्न्न करना परोपकार और समाज कल्याण की भावना रखना, दूसरों के प्रति प्रेम, सहिष्णुता, सौहार्दपूर्ण व्यवहार, आत्म के प्रति सचेत करना, आदि निर्धारित करते हैं। मानवतावादी व अस्तित्ववादी दोनों ही शिक्षा मानव केन्द्रित है। अस्तित्ववादी व्यक्ति का वैयक्तिक और पूर्ण विकास चाहता है वह बालक के व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास की बात करता है। मानववादी भी बालक के व्यक्तित्व की सभी योग्यताओं और क्षमताओं का विकास करना चाहता है। उनके अनुसार यदि बालक के किसी

ISSN: 2454-4248
256 – 260

एक पक्ष पर अधिक बल दिया जाएगा तो बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाएगा।

अस्तित्ववादी विद्यार्थी को आत्मानुभूति और आत्मत्व की पहचान, आन्तरिक सत्य के साक्षात्कार को शिक्षा का एक उद्देश्य मानता है। मानववाद भी आत्मबोध को जाग्रत करना शिक्षा का उद्देश्य मानता है जिससे व्यक्ति को अपनी महानता की अनुभूति हो सके। अस्तित्ववादी शिक्षा का एक लक्ष्य यह भी है कि बालक के चारों और ऐसे वातावरण की रचना करना जिससे उसकी स्वतंत्रता की चेतना का विकास हो और यह चेतना उन सारे बंधन और समस्त रक्षा पंक्ति तोड़ कर रख दे जिनका उपयोग वह निर्णय लेने, योजना बनाने अथवा उसके औचित्य स्थापना के लिए करता है। मानववादी भी बालक में स्वतंत्र रूप से सोचने, विचार करने और निर्णय करने की शक्ति उत्पन्न करना चाहते है। स्वतंत्र चिन्तन से वह स्वविवेक से कार्य कर सकेगा व जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं को समझ सकेगा तथा उनका समाधान भी बिना किसी पूर्वाग्रह के कर सकेगा। अस्तित्ववादी भी पूर्व स्थापित व सर्वमान्य शैक्षिक उद्देश्य को स्वीकार नहीं करता है। उसका मानना है कि पूर्व स्थापित व सर्वमान्य शैक्षिक उद्देश्य से बालक के विकास में बाधा पहुंचती है। इस प्रकार जब शैक्षिक उद्देश्य किसी पूर्वधारणा पर आधारित नहीं है तो पाठ्यक्रम भी पूर्ण धारणा पर निर्धारित करने का विरोध करते है। मानववाद के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा हो जो बालक की आन्तरिक क्षमताओं को प्रकट कर सके। अस्तित्ववादी भी मानते हैं कि पाठ्यक्रम ऐसा हो कि विद्यार्थी जो बनना चाहता है वह बन सके अर्थात् उसके विकास से संबंधित सभी तत्व पाठ्यक्रम में होने चाहिए।

अस्तित्ववाद और मानववाद यह मानते हैं कि पाठ्यक्रम का निर्माण बालक की आवश्यकताओं, रूचि के आधार पर होना चाहिए तथा बालक को किसी विषय को लेने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। बालक को विषय के चयन में स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। दोनों ही विचारधाराएं मानविकी विषयों को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। अस्तित्ववादी मानते हैं कि इस विषय से आत्मनिष्ठा में सहायता मिलती है। बालकों में मानवीय गुण और उदारता के लिए मानवीय शिक्षा आवश्यक है। मानववादी भी मानते हैं कि इन विषयों द्वारा मानवीय संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तान्तरण, आदर्श जीवन सौंदर्यानुभूति, नैतिक और चारित्रिक गुणों व मानवीय संवेदनाओं का विकास किया जा सकता है।

अस्तित्ववादी विज्ञान के विषयों पर कम बल देता है उसके अनुसार व्यक्ति 'स्व' को भूलता है तथा विज्ञान को पढ़ने से आन्तरिक भ्रम पैदा होता है, शान्ति नही परन्तु विज्ञान का वहां तक प्रयोग हो सकता है जहां मनुष्य के अस्तित्व को खतरा न हो। मानववाद विज्ञान के विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देता है। मानववाद के अनसुार विज्ञान के सामान्य अध्ययन द्वारा अनेक अंधविश्वासों से मुक्ति मिलती है। वास्तविकता का बोध होता है मस्तिष्क का क्षेत्र व्यापक होता है तथा मन अनुशासित होता है। मानव की स्वाभाविक जिज्ञासाओं को शान्त करने में विज्ञान का सामान्य अध्ययन अत्यधिक उपयोगी होता है परन्तु मानववादी भी वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग केवल उसी सीमा तक करता है जहां तक मानव का मानवीय पक्ष प्रथम बना रहे।

अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही पाठ्यक्रम में खेल तथा व्यायाम को महत्वपूर्ण स्थान देते है। साथ ही दोनों पाठ्यक्रम में सामाजिक विषयों का प्रमुख स्थान देते है।

ISSN: 2454-4248
256 – 260

अस्तित्ववाद के अनुसार सामाजिक विषयों के द्वारा ही मानव को अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है। मानववादी भी अपने पाठ्यक्रम में सामाजिक विषयों को महत्वपूर्ण स्थान देता है। मानववाद मानता है कि इन विषयों द्वारा विश्वबन्धुत्व समानता, स्वतन्त्रता आदि की भावना पैदा होती है। मानवतावाद सामाजिक आचार–शास्त्र को पाठ्यक्रम में शामिल करता है। परन्तु धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा नही बनाता उसका मानना है कि धार्मिक शिक्षा से उनके अन्धविश्वास उत्पन्न हो जाते है परन्तु अस्तित्ववादी धार्मिक व नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। अस्तित्ववादी पूर्ण मानवता का शिक्षा चाहता है। अपूर्ण सत्ता या अस्तित्व वाले व्यक्ति की 'स्व' की पूर्ण सत्ता मिल जाए और विश्व में व्याप्त अनन्त सत्ता का बोध मनुष्य प्राप्त कर ले यही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। धार्मिक व नैतिक शिक्षा इस दिशा में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है इसलिए स्कूलों और शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक व नैतिक वातावरण बनाया जाना आवश्यक है।

अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही मानते हैं कि व्यवसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाये। अस्तित्ववाद के अनुसार बालक को किसी न किसी व्यवसाय की शिक्षा उसकी रूचि के अनुसार दी जानी चाहिए। मानववादी शिल्प व कला को पाठ्यक्रम मे स्थान देते है।

अस्तित्ववादी व मानववादी दोनों ही मानव केन्द्रित शिक्षण विधियों का समर्थन करते हैं। अस्तित्ववादीयों के अनुसार ऐसी कोई भी विधि जो विद्यार्थी के 'स्व' का विकास करे, आत्मानुभूति और आत्मनिर्भरता का भाव विकसित कर सके वही उत्तम शिक्षण विधि है। मानववादी भी बालक की रूचि, अभिक्षमता, सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा सीखने की प्रवृतियों के प्रभावक तथ्यों को दृष्टि पथ में रखते हुए इस बात पर बल देते हैं कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा प्रणाली के लिए।

अस्तित्ववाद व मानववाद में ऐसी शिक्षण विधियों पर बल दिया गया है जिसमें व्यक्ति स्वयं अपने प्रयास से ज्ञान प्राप्त करता है।

अस्तित्ववाद के अनुसार व्यक्ति स्वयं अपने प्रयास से ज्ञान प्राप्त करता है। मनुष्य अपने जीवन काल में जो भी कार्य करता है अथवा अनुभव करता है वह सब ज्ञान ही है। मानववाद भी मानता है कि शिक्षण की प्रक्रिया में मनुष्य के संकल्प को मुख्य स्थान दिया जाना चाहिए तथा उसके स्वयं प्रयास पर बल दिया जाना चाहिए।

मानववाद के अनुसार शिक्षक द्वारा जो भी शिक्षण विधि प्रयुक्त की जाए उसमें मानवीय अनुभवों का समावेश किया जाना चाहिए।

अस्तित्ववाद शिक्षा में समस्या केन्द्रित प्रणाली को स्वीकार नही करता। उनका मानना है कि समस्याऐं प्रायः सामाजिक और प्रणाली अनुपयोगी होती है, इससे व्यक्ति स्वयं से ज्यादा सामाजिक मूल्यों के करीब हो जाता है। अस्तित्ववादी उस सीमा तक समस्या विधि को उचित मानते है जिस सीमा तक समस्याएं व्यक्ति के जीवन से उद्भव हो और जिनका समाधान भी वैयक्तिक हो।

यहाँ मानववादी भी यह मानते है कि समाज में अनेक समस्याएं बालक के सामने आती हैं। वास्तविक शिक्षा वही है जो समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करे ताकि विद्यार्थी अपने कल्याण हेतु उद्धत हो सके।

अस्तित्ववाद सामूहिक शिक्षण–विधि का विरोध करते हैं उनके अनुसार सामूहिक शिक्षा सम्भव नही है। बालक में समूह प्रकृति जैसी कोई वस्तु नहीं होती है। सामूहिक विधि से आत्मनिष्ठता की भावना दब जाती है परन्तु

ISSN: 2454-4248
256 – 260

मानववाद बालक को एक सामाजिक प्राणी मानते हुए यह मानता है कि इसी समाज में रहकर ही उसका विकास हो सकता है। इसके लिए उसे सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक होना चाहिए व बालक को सभी के साथ मिल जुलकर काम करना चाहिए। ऐसी भावना विकसित करने के लिए सामूहिक शिक्षण–विधि आवश्यक है।

अस्तित्ववादी व मानववादी दोनों ही शिक्षा में अनुशासन को महत्वपूर्ण मानते हैं परन्तु यह अनुशासन दबाव, दण्ड, भय से स्थापित नहीं होना चाहिए। अस्तित्ववाद के अनुसार विद्यार्थियों में अनुशासन स्थापना के लिए किसी आचार–संहिता, निर्देश, दण्ड व पुरस्कार की आवश्यकता नही है। विद्यार्थियों को पूर्ण स्वतन्त्रता देते हुए उन्हे अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी बनाना चाहिए। इसे स्वतः ही अनुशासन स्थापित हो जायेगा। मानववादियों के अनुसार विद्यार्थी को अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी बनाना चाहिए और स्वतन्त्रता भी दी जानी चाहिए। परन्तु अनुशासन की स्थापना प्रेम, सहानुभूति, दया और त्याग के माध्यम से करना चाहिए व विद्यालय में शिक्षकों द्वारा ऐसा आचरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिसका विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े और विद्यार्थी स्व अनुशासित हो। इस प्रकार मानववादी प्रभावात्मक अनुशासन पर बल देते हैं।

अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा का समर्थन करते हैं तथापि वे शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान मानते हैं। अस्तित्ववाद के अनुसार वह शिक्षक ही है जो प्रगतिशील परिस्थितियां उत्पन्न कर सकता है उसके प्रयासों के द्वारा ही विद्यार्थी आत्मतत्व को जानने में समर्थ हो सकता है। मानववाद भी इसी प्रकार के विचार प्रकट करता है। मानववाद के अनुसार शिक्षक ही बालक को एक निश्चित दिशा की और प्रवृत कर सकता है। अध्यापक ही विद्यार्थी की भावनाओं को समझ कर एक सर्वोत्कृष्ट प्राणी के रूप में बालक को पूर्णता प्राप्त कराने में सक्षम बना सकता है।

अस्तित्ववाद व मानववाद दोनों ही यह मानते हैं कि अध्यापक अपने विचारों को विद्यार्थियों पर थोपें नहीं बल्कि वह सिर्फ यथार्थ ज्ञान को विद्यार्थी के सामने रख दें और विद्यार्थी को स्वयं अपने स्वविवेक से निर्णय करने का अवसर दें।

मानववाद द्वारा विद्यार्थी को निर्णय करने के अधिकतम अवसर दिये जाने की बात कही गयी है तो अस्तित्ववाद भी कहता है कि शिक्षक द्वारा छात्रों को इस प्रकार प्रेरित किया जाये कि वह किसी सत्य को ऐसे ही न मान ले, बरन इसलिए माने कि सत्य को उन्होंने स्वयं अपने स्तर पर समझ लिया है।

मानववाद मानता है कि शिक्षक व विद्यार्थी के सम्बन्ध आत्मीय होने चाहिए न की व्यवसायिक। अस्तित्ववाद भी मानता है कि शिक्षक विद्यार्थी के साथ 'मैं' और 'तूं' की आत्मीय परिस्थिति उत्पन्न करते हुए सृजनात्मक दिशा में प्रवर्तन करे।

दोनों ही विचारधाराऐं शिक्षक से यह आशा करती है कि वह ऐसी परिस्थितियों का निमार्ण करे जिससे बालक स्वयं अपनी बुद्धि द्वारा बिना किसी की सहायता से अपने निर्णय ले सके तथा बालक अपने यथार्थ स्वरूप को जान सके।

मानववाद व अस्तित्ववाद दोनों ही विद्यार्थी को शिक्षा–प्रणाली के केन्द्र में रखते हैं। दोनों ही यह मानते हैं कि विद्यार्थी को अपने 'स्व' के स्वरूप का ज्ञान हो वह स्वतन्त्र निर्णय ले सकने की क्षमता रखता हो तथा उसमें मानवीय भावनाएं भी हो। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी की स्वतन्त्रता किसी भी प्रकार से बाधित ना हो।

 ISSN: 2454-4248
256 – 260

अस्तित्ववादी अति व्यक्तिवादी तथा वैयक्तिक स्वतन्त्रता का प्रबल समर्थक होने के नाते विद्यालयों की स्थापना नहीं करता है। वह व्यक्तिगत अध्ययन को ही स्वीकार करता है। परन्तु मानववादी विद्यालय को एक ऐसा स्थान मानते हैं जहां व्यवसायिक एवं नैतिक वृतियां विकसित होती है। विद्यालय का वातावरण लोकतान्त्रिक, समतापूर्ण, सदभावपूर्व होना चाहिए।

इस प्रकार दोनों ही विचारधाराएं मानव को केन्द्र में रखती है। इन दोनों की उत्पति लगभग समान करणों से होने के कारण दोनों में समानताएं अधिक दिखलाई जाती है। दोनों ही विचारधाराएं आज के वैज्ञानिक युग में मानव के गिरते स्तर से चिन्तित है और वे उसे अपने स्वरूप का ज्ञान करवाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनुराधा, नांरग एवं सुनीता (2007). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा. लुधियाना : कल्याणी पब्लिशर्ज ।
3. कपूर, बीना एवं पाण्डेय, रामशक्ल (1998). शिक्षा के दार्शनिक आधार : आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
5. पचौरी, गिरीश (1998). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा ।
6. रूहेला, एस.पी.(2006). विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा और शिक्षक : आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
7. सिँह, एन.पी. (2003). शिक्षा के दार्शनिक आधार : मेरठ, आर.लाल बुक डिपो ।
9. लाल, रमन बिहारी एवं तोमर, राजेन्द्र सिँह (2004). विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक : मेरठ, आर.लाल बुक डिपो ।
10. कुमार, राजेन्द्र (2007). आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा : भिवानी लक्ष्मी बुक डिपो ।